12 बबलू बदल गया

"माँ देर हो रही है। कपड़े पहनाओ। देखो, आलोक तैयार होकर आ गया है।" बबलू जोर से बोला। बबलू की माँ रसोईघर में खाना बना रही थी। उसकी आवाज सुनकर जल्दी से आई। उसे कपड़े पहनाए। मोजे पहनाए और जूते ढूँढने लगी। इतने में रसोईघर से सब्जी जलने की गंध आने लगी। "बबलू तुम जूते ढूँढो, मैं अभी आती हूँ।" कहती हुई माँ तेजी से रसोईघर में गई। उसने देखा, सारी सब्जी जल चुकी है। वह सोचने लगी, बबलू को रोटी के साथ क्या रखूँगी ?

बहुत देर से बबलू को एक जूता नहीं मिल रहा था। शाला की बस भी आने वाली थी। वह जोर से चिल्लाया, “माँ एक जूता नहीं मिल रहा।” आलोक भी ढूँढने लगा। जूता मेज के नीचे पड़ा मिला। माँ ने कहा, “तुम्हें कई बार कहा कि अपना सामान, जूते, बस्ता व कपड़े तय जगह पर रखा करो। इधर–उधर रखने से सुबह–सुबह परेशानी होती है। अब देखो, मैं तुम्हें तैयार करने इधर आई और उधर सब्जी जल गई। अभी रोटी भी नहीं बनी है। आज तुम खाना नहीं ले जा सकोगे। अब तुम शाला जाओ, नहीं तो बस निकल जाएगी।”

बबलू और आलोक चौराहे पर गए। उनकी बस तो निकल गई। दोनों को पैदल जाना पड़ा। शाला देर से पहुँचे। पढ़ाई शुरू हो गई थी। दोनों झिझकते हुए कक्षा में गए।

"आज फिर देर से आए हो, आज क्या हुआ ?" गुरुजी ने पूछा। बबलू चुप रहा। आलोक ने सारी बात बताई।

गुरुजी बबलू को समझाने लगे, "तुम्हें अपना सामान सही जगह पर रखना चाहिए। सामान सही जगह पर रखने से ढूँढना नहीं पड़ता। अपना काम खुद करना सीखो। तैयार भी तुम्हें ही होना चाहिए।" गुरुजी की बातें सुनकर बबलू ने निश्चय कर लिया कि आज से वह अपना काम स्वयं ही करेगा।

खाने की छुट्टी हुई। बबलू का खाना नहीं आया। आलोक ने उसको खाना खिलाया।

शाम को छुट्टी होने पर बबलू घर आया। आज उसने अपना बस्ता, कपड़े, जूते सब ठीक जगह पर रखे। माँ ने नाश्ता लगा दिया था। उसने हाथ धोए और नाश्ता करने बैठा।

कपड़े, जूते, बस्ता ठीक जगह रखने के लिए माँ उसके कमरे में गई। पर यह क्या ? आज सारा सामान जमा हुआ था। वह बहुत खुश हुई। उसने बबलू को शाबाशी दी और कहा, "वाह! बबलू आज तो तुम बिल्कुल बदल गए हो।"

अगले दिन आलोक हमेशा की तरह बबलू के यहाँ पहुँचा। बबलू पहले से ही तैयार था। यह देख आलोक बहुत खुश हुआ। दोनों शाला के लिए चल पड़े।

निर्देश : शिक्षक विद्यार्थियों में अपना सामान संभाल कर व्यवस्थित रखने की आदत का विकास करें। शाला या कक्षा में जूते, टिफिन व अन्य सामान निश्चित जगह पर रखना सिखाएँ।

अभ्यास–कार्य

शब्द–अर्थ

गंध	–	बास
नाश्ता	–	कलेवा
संभाल	–	देख–रेख
झिझकना	–	संकोच करना
चौराहा	–	वह स्थान जहाँ चारों तरफ से आकर रास्ते मिलते हैं

1. पढ़ें और लिखें

सब्जी, रसोईघर, ढूँढ़ना, चिल्लाना, बस्ता, स्वयं, शाबाश, संभालना

2. पढ़ें और समझें

(दो छोटे वाक्यों को 'और' से जोड़कर बोलना व लिखना सिखाएँ)

1. माँ ने मोजे पहनाए		जूते ढूँढने लगी।
2. आलोक	और	बबलू पैदल ही गए।
3. बबलू ने हाथ धोए		नाश्ता करने बैठा।
4. छुट्टी हुई		वह घर आया।

3. सही शब्द लिखकर वाक्य पूरा करें

1. बबलू .... ढूँढने लगा। (जूता/बस्ता)
2. बबलू .... लेकर नहीं जा सका। (खाना/जूता)

3. गुरुजी ने अपना सामान सही जगह पर रखने की शिक्षा ....को दी। (आलोक / बबलू)

4. बबलू ने .... धोकर नाश्ता किया। (हाथ / पैर)

4. नए शब्द बनाएँ

कपड़ा – कपड़े | कमरा ....
जूता .... | बस्ता ....
रखा .... | पहुँचा ....
बिखरा .... | बैठा ....

5. एक शब्द में उत्तर लिखें

1. बबलू को खाना किसने खिलाया ?

....

2. गुरुजी ने बबलू को क्या समझाया ?

....

3. रसोईघर से किसकी गंध आने लगी थी ?

....

6. सुंदर लेख लिखें

बबलू आज तो तुम बिल्कुल बदल गए हो।

....

....

....

आओ, खेलें खेल

कान पकड़ लो, नाक पकड़ लो

पूर्व तैयारी : गोला बनाना

निर्देशन :

बनाए गए गोले में बच्चों को खड़ा करके अथवा बैठाकर शिक्षिका स्वयं बीच में खड़ी रहेगी। वह निर्देश देगी कि वह शरीर के जिस अंग का नाम ले बच्चे उसे छुएँगे, जैसे शिक्षिका कहे 'कान' तो बच्चे अपने कान पकड़ें। शिक्षिका अपने बोलने की गति बढ़ाती जाएँगी।

शिक्षिका शब्दों को बीच–बीच में बदलकर एक ही अंग का दो–तीन बार नाम लेगी। बच्चे सावधान रहकर सही क्रिया करेंगे।

जो बच्चा शिक्षिका के 'नाक' कहने पर 'आँख' छू ले या अन्य कोई अंग तो वह आउट हो जाएगा। उस बच्चे को गोले के बाहर बिठा दिया जाएगा।

इसी खेल को इस प्रकार भी खेला जा सकता है कि क्रिया के साथ कोई नाम जोड़ दिया जाए जैसे 'गीता'। शिक्षिका कहेगी 'गीता कहती है कि कान छुओ' तो बच्चे कान छुएँगे।

यदि शिक्षिका यह नहीं कहती कि 'गीता कहती है' और केवल क्रिया करने को कहती है तो बच्चे क्रिया नहीं करेंगे अन्यथा वे आउट हो जाएँगे। शिक्षिका बदल–बदल कर आदेश देगी। गलत क्रिया करने वाले बच्चे को गोले के बाहर बैठा दिया जाएगा।

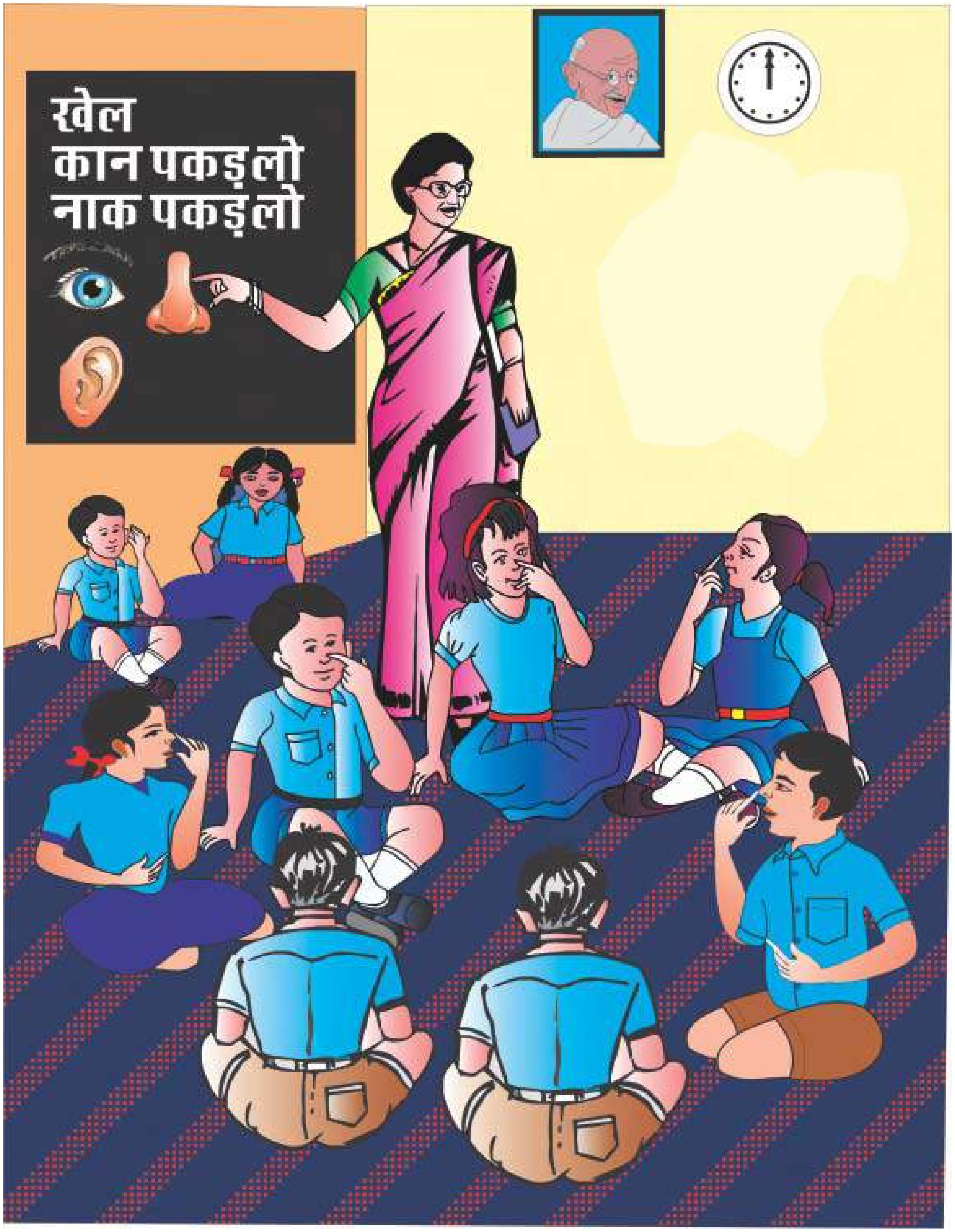
खेल
कान पकड़ लो
नाक पकड़ लो